

पाठ—11 द्रौपदी स्वयंवर

एकचक्रा नगरी के ब्राह्मणों के झुंड के साथ पांडव भी पांचाल देश को द्रौपदी स्वयंवर में शामिल होने के लिए रवाना हुए ।

इस स्वयंवर में शामिल होने के लिए राजकुमार धृष्टद्युम्न घोड़े पर और द्रौपदी हाथी पर सवार होकर आई थी ।

स्वयंवर की शर्त के अनुसार मछली की आँख को बेधने वाले को ही द्रौपदी वर रूप में वरण करेगी ।

ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन ने महाराज द्रुपद की शर्त पूरी कर द्रौपदी को वरण किया और अपनी कुटिया की ओर चले ।

द्रुपद के बुलाने पर पाँचों भाई माता कुंती और द्रौपदी को साथ लेकर राजभवन पहुँचे ।

युधिष्ठिर से उसका परिचय पाकर राजा द्रुपद फूले नहीं समाए और उन्होंने संतोष की साँस ली ।

माँ की आज्ञा से और सर्वसम्मति से द्रौपदी के साथ पाँचों पांडवों का विवाह हो गया ।